able by the State PHE Department, a sum of Rs. 1,377.00 lakhs has been spent on the scheme till September, 1986.

(c) The first Phase of the scheme is likely to be completed within the current financial year.

ICRISAT Hyderabad

1757. SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) the extent to which the Indian farmers were benefited by the ICRISAT at Hyderabad in Andhra Pradesh;

(b) whether it is a fact that 34 countries, agencies and societies are giving financial assistance to this project and, if so, what is the India's contribution thereto;

(c) the number of Indian Scientists at present working in the ICRISAT Hyderabad; and

(d) whether it is a fact that majority of higher research posts are being manned by the scientists from U.S.A and European Countries?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI YOGENDRA MAKWANA): (a) The ICRISAT has developed hybrids of corghums, bajra and varieties of chickpea pigeonpea and groundnut. These varieties have been released by the Central Variety Release Committee and they have reached the farmers for general cultivation. Besides this ICRISAT provides germplasm and breeding material of these crops to the Indian Scientists working in the National Programme and therefore, the varieties developed from this material are also released and made available to the farmers.

(b) During 1986, ICRISAT is being funded by 28 countries, societies and agencies. India's contribution to ICRISAT is US $1,25,000 every year.

(c) There are 86 Indian scientists, working for ICRISAT in Hyderabad

(d) The total number of scientists, belonging to USA and Europe is as follows:—

1. U.S.A. — 13
2. Europe — 15.

राज्यों को बीजों की आपूर्ति करने के संबंध में राष्ट्रीय बीज निगम की विफलता

175. **श्री राधाकिशन मालवीय** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय बीज निगम ने 1986 के खरीफ सीजन के लिए तिलहन, दलहन, मक्का और बाजरा के उन्नत किस्म के बीज सप्लाई करने के लिए विभिन्न राज्य बीज निगमों के साथ अनुबंध किये थे और उनसे पेशगियां भी ली थीं ;

(ख) यदि हां, तो राज्यवार कौन-कौन से बीज तथा कितनी-कितनी मात्रा में बीज सप्लाई करने के लिए अनुबंधों पर हस्ताक्षर किये गये थे और पेशगियां ली गयी थीं ;

(ग) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय बीज निगम की अनुबंध की शर्तों के अनुसार इन राज्यों को बीजों की आपूर्ति करने में विफल रहा है ; और

(घ) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाना) : (क) चूंकि राष्ट्रीय बीज निगम ने खरीफ मौसम, 1986 के लिये दलहन, तिलहन, मक्का और कदन्न के बीज की सप्लाई के लिये किसी राज्य बीज निगम के साथ करार नहीं किया था, अतः उसे कुछ राज्य बीज निगमों से खरीफ, 1986 के दौरान बीज की सप्लाई के लिये तदर्थ मांग प्राप्त हुई थी। केवल मध्य प्रदेश राज्य बीज बीमा निगम से पेशगी रकम प्राप्त हुई थी।

(ख) से (घ) राष्ट्रीय बीज निगम द्वारा खरीफ 1986 के दौरान मांगे गये बीज और राज्य-वार और फसलवार की गई सप्लाई की मात्रा तथा इनकी कमी के कारण संलग्न विवरण में दिये गये हैं।

विवरण

खरीफ 1986 के दौरान राष्ट्रीय बीज निगम द्वारा प्रमाणीकृत बीज की मांग और सप्लाई

क्रम सं०	राज्य बीज निगम	फसल	मांगी गई मात्रा (क्विंटल)	अग्रिम जमा राशि (रुपए)	सप्लाई की गई मात्रा (क्विंटल)	कमी के कारण
1	मध्य प्रदेश	दलहन	1520.00	13,32,988	982.97	राज्य बीज निगम द्वारा न उठाई गई शेष मात्रा
		तिलहन	170.00		शून्य	राज्य बीज निगम द्वारा बीज नही उठाये गये ।
		मक्का	1000.00		309.96	शेष मात्रा नहीं उठाई गई ।
		कदन्न	725.00		573.00	शेष मात्रा नहीं उठाई गई
2	उड़ीसा	दलहन	1800.00	अग्रिम राशि जमा नहीं कराई गई	1114.80	शेष मात्रा नहीं उठाई गई ।
		तिलहन	8.00		—	राज्य बीज निगम द्वारा मांग-पत्र रद्द किया गया ।
		मक्का	200.00		195.00	शेष मात्रा नहीं उठाई गई ।
3	राजस्थान	दलहन	850.00	अग्रिम राशि जमा नहीं कराई गई	249.60	शेष मात्रा उपलब्ध नहीं है ।
		तिलहन	30.00		—	बीज उपलब्ध नहीं है ।
		मक्का	600.00		200.00	राज्य बीज निगम द्वारा शेष मात्रा नही उठाई गई ।
		कदन्न	400.00		402.00	—
4	कर्नाटक	दलहन	—		560.00	